इकाई 12 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 परिचय

12.2 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : मार्क्स्वादी परंपरा

12.3 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : दुर्खीमियन परंपरा

12.4 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : नृजाति प्रणाली विज्ञान संबंधी परंपरा

12.5 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : संरचनावादी परंपरा

12.6 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : बूर्डियू

12.6.1 हैबिटस् तथा क्षेत्र

12.6.2 अभिरूचि, वर्ग तथा शिक्षा

12.7 सारांश

12.8 शब्दावली

12.9 अन्य उपयोगी पुस्तकें

12.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.11 संदर्भ

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप निम्नांकित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगेः

- वर्ग तथा संस्कृति को सामाजिक स्तरीकरण के रूप में समझना।
- सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन की अवधारणा की संकल्पना करना।
- सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन की विभिन्न परंपराओं को व्याख्यायित करना।
- हैबिटस् तथा क्षेत्र के बीच द्वंद्वात्मक संबंधों की विवेचना करना।
- शिक्षा तथा सांस्कृतिक पुनरुत्पादन के मध्य अंतःसंबंधों को समझना।

12.1 परिचय

इस खंड की पिछली इकाइयों में हमने देखा कि सामाजिक स्तरीकरण किस प्रकार धन, शक्ति तथा प्रतिष्ठा जैसे कारकों के संदर्भ में समाज को विभाजन की ओर ले जाता है। एक विशेष तबके के सदस्यों की समान पहचान, समान रुचियां तथा समान जीवन शैली होती है। विभिन्न सामाजिक समूहों के सदस्यों के रूप में वे समाज के प्रतिफल पारितोषिक के असमान वितरण का आनंद अथवा कष्ट भुगतते हैं। हमने यह भी देखा कि किस प्रकार सामाजिक गतिशीलता का तात्पर्य किसी व्यक्ति की एक सामाजिक स्तर से दूसरे सामाजिक स्तर तक गतिविधि की परिणाम से है।

सामान्यतः पर यह माना जाता है कि पूर्व–औद्योगिक समाजों की तुलना में औद्योगिक समाजों में सामाजिक गतिशीलता काफी अधिक है। सामाजिक गतिशीलता प्रतिभा के लिए अवसर की संभावना तथा वास्तविक प्रयासों के लिए पारितोषिक भी उपलब्ध कराती है। अतः एक ओर तो यह किसी भी समाज की वर्ग संरचना को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, वही दूसरी ओर यह भी निर्धारित करती है कि समाज कितना प्रतिभावान है। इसलिए, इस इकाई में हम इस तथ्य पर ध्यान देंगे कि सामाजिक दुनिया में सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन किस प्रकार प्रभावी वर्गों के सदस्यों को सुगम तथा प्रभावी सामाजिक गतिशीलता की ओर ले जाता है।

कई समाजशास्त्रियों ने वर्ग संरचना को एक विशेष प्रकार की वर्ग चेतना को जन्म देकर वर्ग क्रिया की दिशा में ले जाने के रूप में समझा है। वर्ग पहचान के विषय में चर्चा करने वाले अधिकांश कार्यों में सांस्कृतिक अंतर पर जोर दिया गया है। ये सांस्कृतिक विभिन्नता स्तरीकरण प्रणाली में समूहों के बीच अभिरूचि तथा जीवन शैली में विशेष अंतर को दर्शाते हैं।

12.2 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादनः मार्क्सवादी परंपरा

कार्ल मार्क्स के विचार में, मजदूरी बाजार के क्षेत्र में लोगों के बीच संबंधों की विकृत छवि उत्पन्न करती है और बनाती है। उत्पादन के साधनों के स्वामित्व तथा गैर–स्वामित्व के आधार पर मुख्य रूप से दो वर्ग उभर कर आते हैं। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व रखने वाला एक समूह कार्य समूह (उत्पादन के साधनों के गैर–मालिक) को उनके श्रम के बदले में मजदूरी की पेशकश करता है। मार्क्स का तर्क है कि ऐसा प्रतीत होता है कि मजदूरी श्रम के बदले में उचित विनिमय का साधन है यद्यपि मूलरूप में यह श्रम शक्ति अपने उपभोक्ताओं के लिए 'अधिशेष मूल्य' पैदा कर रही है। अतः सही अर्थों में यह मजदूरी सम्बन्ध 'शोषण' का सम्बन्ध है, तथा ट्रेड यूनियन सौदेबाजी, मजदूरी वृद्धि, सेवाओं की बेहतर स्थितियों के प्रयासों के माध्यम से मजदूरी की स्थिति को बदलने के लिए जो भी प्रयास होंगे, शोषण की व्यवस्था हमेशा पुनः उत्पन्न होगी। इसलिए मार्क्स के अनुसार बाजार संस्कृति के घटकों को इस तरह पुनः पेश किया जाता है कि पुरानी व्यवस्था के अनुरूप वास्तविक संबंध बने रहते हैं तथा छिपे रहते हैं।

लुई अल्थुसर की 'इंटरपेलेशन' की अवधारणा ने सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान के उद्‌भव को विधिवत् रूप में प्रस्तुत किया। 'इंटरपेलेशन' एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों से संघर्ष करते हैं उनके साथ समावेशन करते है तथा उन्हें आत्मसात करते हैं। सत्ता के साथ किसी विशेष संबंध में किसी की स्थिति का निर्धारण संस्कृतियों के दिए गए दृष्टिकोणों की स्वीकृति या अस्वीकृति से होता है। 'इंटरपेलेशन' का सबसे प्रमुख उदाहरण विशिष्ट पुरुष तथा महिला भूमिकाएँ हो सकती है जो समाज द्वारा बहुत प्रारंभिक अवस्था से निर्दिष्ट की जाती रही हैं। हम यह स्वीकार करने के अभ्यस्त हैं कि पुरुष प्रमुख और अधिक शक्तिशाली सेक्स हैं, जबकि महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक संवेदनशील, दयालु तथा देखभाल करने वाली होती हैं। पुरुषों से अपेक्षा की जाती है कि वे घर से बाहर जाएं और अपने परिवार की जीविका के लिए पैसे कमाने के लिए कड़ी मेहनत करें। वहीं दूसरी ओर महिलाओं को घर का काम करना चाहिए तथा बच्चों का पालन–पोषण करना चाहिए। इसलिए, इन उदाहरणों से हम देख सकते हैं

कि किस प्रकार समाज इन विचारों को हमारे दिमाग में बिठाता है साथ ही सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन की दिशा की ओर अग्रसर करता है।

12.3 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादनः दुर्खीमियन परंपरा

दुर्खीम के लिए, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पुनरूत्पादन का विषय परिवर्तन के विकृत वैचारिक मुखौटे के पीछे उनकी घटना को प्रकट नहीं करते हैं, वरन् उपयुक्त सामूहिक धर्मनिरपेक्ष विश्वास की खोज करते हैं जो परिवर्तन के समक्ष एकजुटता के साथ पुनरुत्पादन को सुनिश्चित करेगा (स्मिथ और जेनक्स 2000)। श्रम विभाजन में, दुर्खीम ने 'यांत्रिक' तथा 'जैविक' एकजुटता के रूप में आधुनिकता की निरंतरता में दो आदर्श प्रकार के एकीकरण के विषय में बात की। यांत्रिक एकजुटता में अपेक्षाकृत अविभाज्य सामाजिक संरचना होती है, कम विशेषज्ञता श्रम का बहुत कम या कोई विभाजन नहीं होता है तथा गहन सामूहिक चेतना होती है। गतिशील घनत्व यांत्रिक से जैविक एकजुटता में परिवर्तन की ओर जाता है। जैविक एकजुटता में बहुत अधिक विभेदित सामाजिक संरचना, उच्च विशेषज्ञता तथा श्रम का बहुत अधिक और परिष्कृत विभाजन है। इसके अतिरिक्त सामूहिक चेतना से दूर व्यक्तिगत चेतना के आरोहण की ओर एक गति होती है।

दुर्खीम तथा उनके अनुयायियों ने सौम्य पुनरूत्पादन के सिद्धांत का निर्माण करने का प्रयास किया। एक सिद्धांत, जो 'एनोमी' (प्रतिमानहीनता) जैसे संभावित विखंडन के समक्ष समाज को एक साथ रखता है। दुर्खीम, संबंधित मार्क्सवादियों के विपरीत, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पुनरूत्पादन की आवश्यकता, परिवर्तन के माध्यम से अनुरूपता की आवश्यकता पर जोर दे रहा है। दुर्खीमियन परंपरा सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन को आशापूर्ण दृष्टि से देखती है। यह विभाजनकारी होने के बजाय सहमति से है और इसकी प्रेरणा परस्पर विरोधी के बजाय एकीकृत है।

12.4 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादनः नृजातिविज्ञान संबंधी परंपरा

नृवंशविज्ञान के अग्रदूत, गारफिंकल, दुर्खीम की तरह, ''सामाजिक तथ्यों'' को मौलिक समाजशास्त्रीय घटना मानते हैं। लेकिन गारफिंकल के ''सामाजिक तथ्य'' दुर्खीम के ''सामाजिक तथ्यों'' से बिल्कुल अलग हैं। दुर्खीम की 'सामूहिक चेतना' गारफिंकल्स की लोगों के रोजमर्रा के ज्ञान को ग्रहण करने की अवधारणा के समान है। नृवंशविज्ञानियों के लिए, सांस्कृतिक पुनरूत्पादन एक आवश्यक प्रक्रिया के साथ–साथ एक उद्देश्य भी है। गारफिंकल के शब्दों में नृवंशविज्ञान का केंद्र बिंदु इस प्रकार हैः –

नृवंशविज्ञान के लिए सामाजिक तथ्यों की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता, प्रत्येक समाज के स्थानीय रूप से, अंतर्जात रूप से उत्पादित, स्वाभाविक रूप से संगठित, प्रतिक्रियात्मक रूप से जवाबदेह, व्यावहारिक उपलब्धि, बिना समय की परवाह के सदस्यों का काम, जहॉ चोरी की कोई संभावना न हो, छिपना, स्थगित करना, ये समस्त समाजशास्त्र की मौलिक घटनाएं है।

(गारफिंकेल 1991:11)

नृवंशविज्ञान ने विशेषज्ञ के रूप में समाजशास्त्री की भूमिका को भंग कर दिया है। इसके अनुसार, समाजशास्त्री सामान्य सदस्य के समान कौशल तथा प्रथाओं का प्रयोग करते हैं लेकिन उनके पास ऐसी प्रथाओं पर पुनः चितंन करने की क्षमता है। यह संस्कृति के पुनरुत्पादन में एजेंट के रूप में समाजशास्त्री तथा आम सदस्य दोनों की अनिवार्यताओं को दोहराता है।

12.5 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादनः संरचनावादी परंपरा

संस्कृति के अध्ययन के लिए संरचनावाद एक प्रभावशाली परिप्रेक्ष्य है। इसकी उत्पत्ति भाषाविज्ञान में हुई है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, सामाजिक जीवन भाषा के माध्यम से निर्मित और निर्देशित होता है। फर्डिनेंड डी सॉसर (1960) ने मूल रूप से यह प्रतिपादित किया था कि सामाजिक दुनिया की किसी भी सांस्कृतिक घटना के अंतर्निहित स्वरूप को भाषाई घटना के संदर्भ में समझना होगा। सामाजिक जीवन को समझने के लिए संकेत बहुत महत्वपूर्ण पहलू हैं। संकेत तथा सांकेतक मिलकर एक चिन्ह बनाते हैं। सॉसर का मत था कि सांकेतिक और सांकेतक के बीच एक स्वेच्छित संबंध है। भाषा केवल असंबंधित संकेतकों का संग्रह नहीं है। संकेतकों के अर्थ हमेशा अन्य संकेतकों के सापेक्ष होते हैं। विशेष रूप से यहां मुख्य महत्व अंतर के संबंध से हैं, जिसमें द्विआधारी विरोध भी शामिल है। इसलिए, यहाँ एक सामाजिक दुनिया है जिसमें अर्थ, मानव तथा सामाजिक दुनिया के अन्य सभी पहलुओं को भाषा की संरचना द्वारा आकार दिया जा रहा है। सॉसर ने तर्क दिया कि एक सामाजिक तथा सांस्कृतिक घटना के रूप में भाषा एक सामाजिक समूह के सदस्यों द्वारा साझा की जाती है तथा अगली पीढ़ी को प्रेषित की जाती है, इसलिए, यह स्थिर और अपरिवर्तनीय होती है।

जहां सॉसर ने संकेतों तथा भाषा की बुनियादी संरचना को उजागर करने का प्रयास किया, जिसने संरचनावाद के विकास को प्रभावित किया, वहीं दूसरी ओर, क्लॉड लेवी–स्ट्रॉस (1964), नातेदारी प्रणालियों तथा मिथकों की समझ में संरचनावाद का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने सांस्कृतिक घटना को समझने के लिए मुख्य रूप से भूगर्भीय रूपक का इस्तेमाल किया। उन्होंने तर्क दिया कि सांस्कृतिक घटना को सांस्कृतिक स्तरों की गहराई तथा उनके अंतर्संबंधों के स्वरूपो के माध्यम से समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में सांस्कृतिक तत्व गहरे स्तर पर अंतर्निहित प्रतिमानों की अभिव्यक्ति हैं। पूरे सामाजिक जगत में मौजूद विभिन्न नातेदारी व्यवस्था या मिथकों का विवरण बहुत भिन्न हो सकता है, लेकिन मूल संरचना एक ही है। कुल मिलाकर संरचनावाद में विशेष संस्कृति में एक संकेत का अर्थ सामान्यतः सांकेतक तथा संकेत के बीच स्वेच्छित संबंध पर नियंत्रण करने के सम्मिलन से उत्पन्न होता है। तथापि, सामाजिक दुनिया में प्रचलित ये परंपराएं संस्कृति का पुनरुत्पादन करती हैं, तथा संरचनावाद के भीतर संस्कृति पुनरूत्पादन पर निर्भर है।

बोध प्रश्न 1

1) सांस्कृतिक पुनरूत्पादन से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

2) मार्क्सवादी परंपरा के दृष्टिकोण से सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन की अवधारणा को संक्षेप में समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन पर दुर्खीम के विचारों की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12.6 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादनः बूँर्डियू

बूँर्डियू ने संस्कृति का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किया। उनके विचार सामाजिक क्षेत्र में संस्कृति के महत्व को समझने के लिए शक्ति तथा अधिकार के संबंध पर एक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। उन्होंने शिक्षा प्रणाली पर अपने विश्लेषण का ध्यान इस बिंदु पर केंद्रित किया, कि किस प्रकार यह संस्थान वैध ज्ञान के प्रसारण तथा गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बॉर्डियू ने अपना विश्लेषण निम्नांकित स्वरूप में शुरू कियाः

सांस्कृतिक क्षेत्र को क्रांतिकारी गतिविधियों के स्थान पर अनुक्रमिक पुनर्गठन द्वारा रूपांतरित किया जाता है, कुछ विषयों को सामने लाया जाता है जबकि अन्य को पूरी तरह से समाप्त किए बिना एक तरफ व्यवस्थित किया जाता है, जिससे बौद्धिक पीढ़ियों के बीच संचार की निरंतरता संभव बनी रहे। हालांकि, सभी विषयों में, एक निश्चित अवधि के विचार को सूचित करने वाले स्वरूप को पूरी तरह से केवल स्कूल प्रणाली के संदर्भ में ही समझा जा सकता है, जो अकेले उन्हें स्थापित करने तथा अभ्यास के माध्यम से उन्हें विकसित करने में सक्षम है।

(बूँर्डियू इन यंग 1971: 192)

इस अर्थ में बूँर्डियू इस बात पर जोर देते हैं कि संचार के रूप और पैटर्न विशेष समुदायों की विचारधारा को कैसे कायम रखते हैं। उनके अनुसार शिक्षा प्रणाली प्रमुख सामाजिक वर्गों की संस्कृति के पक्ष में पक्षपाती है। इस प्रकार, यह निम्न वर्गों के ज्ञान और कौशल की अवहेलना करता है। शिक्षा के संपर्क को संबोधित करते हुए, बूँर्डियू (1971) का तर्क है कि शिक्षा प्रणाली की प्रमुख भूमिका सांस्कृतिक पुनरूत्पादन है। बूँर्डियू संस्कृति के तत्वों के संचरण के संदर्भ में दुर्खीमियन ज्ञानमीमांसा से भिन्न विचार रखते हैं। दुर्खीम के लिए, हमेशा समग्र रूप से संस्कृति के तत्व का संचरण होता है, जबकि बूँर्डियू के लिए, यह 'प्रमुख वर्गों' की संस्कृति का पुनरुत्पादन है। इन प्रभुत्वशाली वर्गों के पास आख्यानों का निर्माण करने की शक्ति है तथा निम्न वर्गों पर

अपनी विचारधारा तथा ज्ञान को अधिरोपित करने की क्षमता है। साथ ही वे ज्ञान और संचार के इस संचरण को वैध मानते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रभुत्वशाली वर्ग अपनी संस्कृति को गढ़ने तथा उसकी हिमायत करने में सक्षम होते हैं, जो कि सर्वाधिक संपन्न तथा ग्रहण करने के योग्य होती हैं। वे शैक्षिक प्रणाली में ज्ञान के आधार के रूप में अपनी संस्कृति को स्थापित करने में भी सक्षम हैं।

बॅूर्डियू का दावा करते हैं कि प्रतीकात्मक हिंसा के एकाधिकार पर संघर्ष का प्रमुख स्थल शैक्षिक प्रणाली है। प्रतीकात्मक हिंसा मुख्य रूप से सांस्कृतिक प्रक्रिया के माध्यम से की जाती है। इस प्रतीकात्मक हिंसा के माध्यम से नियंत्रण एक ऐसी संस्कृति के प्रति मानव समाजीकरण का एक स्वाभाविक तरीका बन जाता है जो व्यापक रूप से दमनकारी है। यहाँ हम बॅूर्डियू पर मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव पाते हैं। वह संरचनाओं तथा संस्थानों के दिखावे की उपस्थिति को लेकर आलोचनात्मक है तथा वह इन प्रक्रियाओं द्वारा विकृत किए गए अंतर्निहित सार तथा वास्तविक स्थितियों को गहराई से उजागर करने का प्रयास करते है। बॅूर्डियू के लिए, शिक्षा प्रणाली मौजूदा शक्ति और वर्ग संबंधों को पुनः उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बॉर्डियू के लिए संस्कृति का प्रमुख अधिकार 'सांस्कृतिक पूंजी' है। उनका दावा है कि जिनके पास सांस्कृतिक पूंजी है उनके पास शासक वर्ग की संस्कृति को पुनः उत्पन्न करने की शक्ति और साधन हैं। सांस्कृतिक पूंजी सामाजिक स्थान में विभिन्न सामाजिक स्तरों के बीच अंतर के लिए एक मानदण्ड बन जाती है। शैक्षिक प्राप्ति में वर्ग अंतर मुख्य रूप से पूरे सामाजिक ढांचे में सांस्कृतिक पूंजी के असमान वितरण के कारण हैं। शैएंक्स तथा ग्लुस्जिंस्की (2007) के अनुसार, जिन बच्चों के माता–पिता उत्तरमाध्यमिक शिक्षा प्राप्त है उनमें उच्च शिक्षा में भाग लेने की 60 प्रतिशत संभावना है, जबकि जिन बच्चों के माता–पिता के हाई स्कूल की शिक्षा की डिग्री से कम शिक्षा प्राप्त है, उनके बच्चों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की संभावना केवल 32 प्रतिशत है।

उच्च वर्ग की पृष्ठभूमि के छात्रों को एक अंतर्निहित विशेषाधिकार के साथ–साथ अन्य लाभ भी होता है क्योंकि वे आधिपत्य की संस्कृति में सामाजीकृत होते हुये वयस्क हुये हैं। बॅूर्डियू का तर्क है कि, सभी स्कूली शिक्षा की सफलता मूल रूप से जीवन के शुरुआती वर्षों में हासिल की गई शिक्षा पर निर्भर करती है। इसलिए, स्कूलों में सफलता इन पूर्व कौशल तथा ज्ञान पर निर्भर करती है। शिक्षा कभी भी शून्य से शुरू नहीं होती है हमेशा इसकी एक पूर्व नींव होती है। प्रभावशाली वर्गों के छात्रों में समाजीकरण की प्रक्रिया इस तरह से होती है कि उन्होंने स्कूली शिक्षा के अपने प्रारंभिक वर्ष के दौरान स्वयं आवश्यक कौशल तथा ज्ञान को आत्मसात कर लिया। बॅूर्डियू के शब्दों में, उनके पास 'संदेशो की कूटभाषा होती है' जिसके माध्यम से वे कक्षा में प्रसारित संदेशों को समझने में सक्षम होते हैं। इसलिए, वर्ग की पृष्ठभूमि किसी के स्तर में ऊपर की ओर बढ़ने की संभावनाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, 30 से 40 प्रतिशत या 40 से 50 प्रतिशत की आय वर्ग में आने वाले माता–पिता से पैदा हुए बच्चों के शीर्ष 50 प्रतिशत आय अर्जित करने वालों में जाने की संभावना लगभग 50 प्रतिशत थी। दूसरी ओर, नीचे के 20 प्रतिशत आय वर्ग वाले माता–पिता के बच्चों के शीर्ष 50 प्रतिशत में जाने की केवल 38 प्रतिशत संभावना है। इसके अतिरिक्त, नीचे के 20 प्रतिशत परिवारों के 62 प्रतिशत बच्चे निचले के 50 प्रतिशत आय अर्जित करने वाले परिवारों में रहे। (क्रोक, 2010)। अतः सांस्कृतिक पूँजी का सामाजिक समूहों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। मध्यम वर्ग के छात्र की उपसंस्कृति प्रमुख संस्कृति के करीब है, इसलिए

उनके पास कामकाजी वर्ग के छात्रों की तुलना में उच्च सफलता दर की अच्छी संभावना है।

12.6.1 हैबिट्स तथा क्षेत्र

बॅूर्डियू (1984) ने अपने बाद के काम में हैबिट्स तथा क्षेत्र की अवधारणा के संदर्भ में अपने विचारों को विकसित किया।

हैबिट्स : यह समाज की संस्कृति तथा सामाजिक संबंधों की संरचना के बीच संबंध को समझने में मदद करता है। हैबिट्स अभ्यस्त मानसिक संरचनाएं हैं जो लोगों के कार्य को नियंत्रित करती हैं। यह एक संज्ञानात्मक संरचना है जिसके माध्यम से लोग सामाजिक क्षेत्र को समझते हैं, सोचते हैं तथा उसकी सराहना करते हैं। हैबिट्स समाज का उत्पत्ति तथा उत्पादन दोनों करता है। समाज के भीतर एक पद तथा अनुभव के दीर्घकालिक नियंत्रण के माध्यम से एक आदत विकसित की जाती है। अलग–अलग सामाजिक समूहों के समाज में अलग–अलग अनुभव तथा जीवन की संभावनाएं होती हैं, इसलिए हर समूह की आदत या हैबिट्स एक जैसा नहीं होता है। यह उस सामाजिक दुनिया में किसी की स्थिति की प्रकृति पर निर्भर करता है। वर्तमान निवास स्थान का निर्माण तथा उत्पत्ति हमेशा सामूहिक इतिहास के अंर्तगत होती हैः '' इतिहास व्यक्तिगत आदत (हैबिट्स), तथा सामूहिक प्रथाओं का उत्पादन करता है, इसलिए इतिहास, इतिहास द्वारा बनाई गई योजनाओं के अनुसार कार्य करता है''। (बौर्डियू, 1977:82)

क्षेत्र : क्षेत्र वस्तुनिष्ठ पदों के बीच संबंधों का एक समूह है। बॅूर्डियू इस क्षेत्र को इस तरह से देखते हैं कि दोनों ''उन रणनीतियों को रेखांकित तथा निर्देशित करते हैं जिससे इन पदों पर रहने वाले अधिभोगी व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से, अपनी स्थिति की रक्षा या सुधार करने के लिए, तथा अपने स्वयं के उत्पादों के लिए सबसे अनुकूल पदानुक्रम के सिद्धांत को लागू करना चाहते हैं'' (बॅूर्डियू, रिट्जर में उद्धृत 2011:535)। क्षेत्र प्रतिस्पर्धी लड़ाइयों का एक रणक्षेत्र है जिसमें विभिन्न प्रकार की पूंजी जैसे आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रतीकात्मक को रणनीतिक रूप से उपयोग किया जाता है। एजेंटों को उनकी सामाजिक स्थिति को सुरक्षित रखने या सुधारने के लिए उपयुक्त रणनीति क्षेत्र में उनकी स्थिति पर निर्भर करती है।

बॅूर्डियू हैबिटस तथा क्षेत्र के बीच के रिश्ते को दो मुख्य तरीकों से देखते हैं, ''एक तरफ, क्षेत्र हैबिटस को अनुकूलित करता है दूसरी ओर, हैबिटस क्षेत्र को एक ऐसी चीज के रूप में निर्मित करता है जो बोधगम्य है, जिसका अर्थ तथा मूल्य है, और जो ऊर्जा के निवेश के योग्य है'' (वहीः537)। इस प्रकार, हैबिटस तथा क्षेत्र के बीच एक द्वंद्वात्मक संबंध है।

बॅूर्डियू के शब्दों में :

संस्कारित वास का गठन करने वाले हैबिटस मात्र बनते हैं, केवल कार्य करते हैं तथा केवल एक क्षेत्र में, एक क्षेत्र के संबंध में मान्य होते हैं..... जो अपने आप में 'संभावित शक्तियों का क्षेत्र' है, एक 'गतिशील' स्थिति है जिसमें बल केवल कुछ स्वभावों के साथ अपने संबंधों में प्रकट होते हैं। यही कारण है कि विभिन्न क्षेत्रों में, विभिन्न विन्यासों में, एक ही क्षेत्र की एक ही प्रथा विपरीत अर्थ और मूल्य प्राप्त कर सकती है।

(बूॅर्डियू, 1984:94 जैसा कि रिट्जर में उद्धृत 2011:538)

बूॅर्डियू के अनुसार, संरचनात्मक अपरिवर्तनीयताओं, विशेष रूप से हैबिटस् तथा क्षेत्र के कारण, सामाजिक दुनिया में एक विशिष्ट अभिरूचि तथा जीवन शैली उत्पन्न करने की प्रवृत्ति है, जिसका परिणामतः शिक्षा से गहरा संबंध है।

12.6.2 अभिरूचि, वर्ग तथा शिक्षा

अपने अनुभवजन्य अध्ययन, *"डिस्टिंक्शनः ए सोशल क्रिटिक ऑफ द जजमेंट ऑफ टेस्ट (1984)"*, में बूॅर्डियू विभिन्न सामाजिक समूहों की सौंदर्य संबंधी प्राथमिकताओं पर चर्चा करते है। इस कार्य में, बूॅर्डियू यह प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहे हैं कि लोगों की अभिरूचि तथा जीवन शैली उनके समाजीकरण तथा शिक्षा से कैसे संबंधित हैं। उनका तर्क है कि सामाजिक उत्पत्ति के लिए सांस्कृतिक प्रथाओं तथा शैक्षिक पूंजी के मध्य बहुत ही महत्वपूर्ण संबंध है। विभिन्न सामाजिक वर्गों के अलग–अलग अभिरूचि तथा जीवन शैली होती है, साथ ही इन विभिन्न सामाजिक वर्गों में भी प्रतिष्ठा के विभिन्न स्तर होते हैं। इसलिए, सांस्कृतिक पूंजी कला, फिल्मों, संगीत तथा भोजन में अभिरूचि तथा शैक्षिक योग्यता साथ ही ज्ञान के संदर्भ में सौंदर्य संबंधी प्राथमिकताओं के विषय में विभिन्न रूप ले सकती है।

बूॅर्डियू के अनुसार, सांस्कृतिक पूंजी के विभिन्न स्तर हैं जो समाज को विभिन्न सामाजिक समूहों में विभाजित करते हैंः

1) वैध संस्कृति प्रमुख वर्गों की संस्कृति है जिसे संभ्रात वर्गो द्वारा महत्व तथाा सराहना की अनुमति दिया जाता है जो कि उच्च कला, शास्त्रीय संगीत तथा गंभीर साहित्य के रूप में जानी जाती है।

2) मिडिलब्रो कल्चर या मध्यम वर्ग की संस्कृति में प्रमुख कला रूपों की सराहना तथा समझ शामिल है, लेकिन सबसे बड़ी कलात्मक योग्यता वाले लोगों के लिए साधारण काम अधिमान्य होता है। उदाहरण के लिए, संगीत के संदर्भ में, इसमें बीथोवेन तथा मोजार्ट जैसे महान शास्त्रीय संगीतकारों के काम के स्थान पर गेर्शविन की रैप्सोडी इन ब्लू की सराहना शामिल हो सकती है।

3) लोकप्रिय अभिरूचि जनसंस्कृति या लोकप्रिय संस्कृति के समान है तथा इसमें शामिल है, उदाहरण के लिए, पॉप संगीत।

समाज में जनसामान्य परवरिश तथा शिक्षा के माध्यम से अच्छी अभिरूचि व्यक्त करना सीखते हैं। वैध अभिरूचि वाले लोग सांस्कृतिक रूप से उन्नत समूह तक आसानी से पहुंच सकते हैं। बूॅर्डियू का तर्क है कि शिक्षा प्रणाली वैध अभिरूचि के लिए उच्चतम मूल्य देती है। सांस्कृतिक पूंजी का विशेष मूल्यवान संकेतों तथा उनकी प्रस्तुति की शैलियों के रूप में संचरण शिक्षा और विभिन्न समाजीकरण रूपों का प्राथमिक कार्य है। इसलिए जो लोग वैध अभिरूचि के साथ बड़े हुए हैं उन्हें शिक्षा प्रणाली में सफल होना आसान लगता है तथा उनके लंबे समय तक बने रहने की भी संभावना है।

बूॅर्डियू का तर्क है कि शैक्षिक उपलब्धि या अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी केवल अच्छे तथा विशिष्ट अभिरूचि पर निर्भर नहीं है, लेकिन यह निश्चित रूप से मदद करती है। उदाहरण के लिए, निजी तौर पर शिक्षित, मध्यम वर्ग के छात्रों को अक्सर प्रमुख विश्वविद्यालयों का विस्तृत ज्ञान होता था, जिसे उन्होंने परिवार और स्कूल दोनों से हासिल किया था। यह अपने छात्रों के बारे में शिक्षक की धारणाओं को भी आकार

देता है। बूर्डियू की *सांस्कृतिक अचेतनावस्था* की प्रमुख अवधारणा हैबिट्स की धारणा के साथ दृढ़ता से प्रतिध्वनित होती है। यह मौन, कल्पित तथा अनकहे आधारों को संदर्भित करता है जो किसी भी सांस्कृतिक उत्पादन की पूर्व शर्त है। इसलिए, शिक्षक अनजाने में विभिन्न अभिरूचियों को पहचान लेते हैं। वे वैध अभिरूचि के प्रति उच्च स्नेह तथा झुकाव रखते हैं। बूर्डियू का तर्क है कि शिक्षक छात्रों को ग्रेड प्रदान करते समय शिष्टाचार और तथा शैली की अमूर्त बारीकियों से बहुत प्रभावित होते हैं। एक छात्र के सफल होने की संभावना अधिक होती है यदि उसकी शैली प्रमुख वर्ग या वैध संस्कृति के करीब हो। उनके सापेक्ष वैध संस्कृति की कमी के कारण श्रमिक वर्ग के छात्रों के परीक्षाओं में असफल होने की संभावना अधिक होती है। यह कामकाजी वर्ग के छात्रों को उच्च शिक्षा के साथ–साथ प्रमुख विश्वविद्यालयों में प्रवेश करने से बाधित करता है। अतः इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था की प्रमुख भूमिका श्रमिक वर्ग के विद्यार्थियों को उच्च स्तर की शिक्षा से हटाना है।

बूर्डियू के शब्दों में:

स्कूल का उपयोग करने का स्वभाव तथा उसमें सफल होने की प्रवृत्ति, जैसा कि हमने देखा है, इसका उपयोग करने के उद्देश्य अवसरों पर तथा इसमें सफल होने पर निर्भर करता है जो विभिन्न सामाजिक वर्गों से जुड़े होते हैं, ये स्वभाव तथा प्रवृत्तियां बदले में गठित होती हैं शैक्षिक अवसरों की संरचना को बनाए रखने में सबसे महत्वपूर्ण कारक शैक्षिक प्रणाली और वर्ग संबंधों की प्रणाली के बीच संबंधों के एक उद्देश्यपूर्ण रूप से समझने योग्य अभिव्यक्ति के रूप में हैं। यहां तक कि आत्म–उन्मूलन की ओर ले जाने वाले नकारात्मक स्वभाव तथा प्रवृतियां, जैसे, उदाहरण के लिए, आत्म–ह्रास, स्कूल का अवमूल्यन तथा उसका बहिष्कार तथा अनुज्ञा या विफलता या बहिष्करण की उम्मीद से इस्तीफा दे देने को उन प्रतिबंधों की अचेतन प्रत्याशा के रूप में समझा जा सकता है जो स्कूल ने उद्देश्यपूर्ण रूप से प्रभुत्व वर्गों के लिए संचय किया है।

(बूर्डियू तथा पासरॉन 1977:204–5)

बोध प्रश्न 2

1) वैध संस्कृति से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) लोकप्रिय अभिरूचियों की विशेषताओं की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) बूर्डियू के कार्य में हैबिटस तथा क्षेत्र की द्वंद्वात्मकता पर चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

4) प्रतीकात्मक हिंसा को बनाये रखने में शिक्षा प्रणाली की भूमिका की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

12.7 सारांश

सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन का विचार एक ओर गतिशील प्रक्रिया तथा दूसरी ओर सामाजिक संरचनाओं के स्थिर पहलू का संदर्भ देता है। यह सामाजिक अनुभव में निरंतरता और परिवर्तन की आवश्यकता को पुष्ट करता है। इस इकाई में हमने मार्क्स्वादी परंपरा की दृष्टि के माध्यम से तथा दुर्खीमियन परंपरा, नृवंशविज्ञान परंपरा, संरचनावादी परंपरा और सबसे विशेष रूप से और व्यापक रूप से बूर्डियू के दृष्टिकोण के माध्यम से सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन के विचारों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। बूर्डियू ने समुचित रूप से निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा की मुख्य भूमिका सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन की संतति है, अर्थात, सामाजिक वर्गों के बीच शक्ति और विशेषाधिकार के संबंधों का पुनरुत्पादन। शैक्षिक संस्थानों में सामाजिक स्तरीकरण तथा असमानता का पुनरुत्पादन किया जाता है। शैक्षिक प्रणाली में वैध संस्कृति को पुरस्कृत तथा सराहा जाता है। एक ओर, निम्न वर्गों की वंचित स्थिति को परीक्षा में विफलता तथा आत्म–उन्मूलन द्वारा उचित ठहराया जाता है, दूसरी ओर, प्रमुख वर्गों की विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति शैक्षिक उपलब्धियों और सफलता से वैध होती है।

12.8 शब्दावली

संस्कृति : यह लोगों के आचरण, रहन–सहन तथा जीवन जीने का तरीका है।

पुनरुत्पादन : सामाजिक जीवन के अनुभव के संबंध में, इस तरह के पुनरुत्पादन को प्राचीन शासन की पुष्टि होनी चाहिए।

हैबिटस् : हैबिटस मानसिक या संज्ञानात्मक संरचनाएं हैं जिसके माध्यम से लोग सामाजिक दुनिया से निपटते हैं।

क्षेत्र : क्षेत्र अपने भीतर वस्तुनिष्ठ स्थितियों के बीच संबंधों का एक समूह है।

आर्थिक पूंजी : इसमें भौतिक वस्तुएं शामिल हैं– जैसे भूमि या संपत्ति, रोजगार तथा अन्य आय के स्रोत।

सांस्कृतिक पूंजी : इसके अंर्तगत विभिन्न प्रकार के वैध ज्ञान शामिल होते हैं।

सामाजिक पूंजी : इसमें लोगों के बीच मूल्यवान सामाजिक संबंध होते हैं।

प्रतीकात्मक पूंजी : यह किसी के सम्मान तथा प्रतिष्ठा से उपजा है।

सांकेतिक हिंसा : वह हिंसा जो किसी सामाजिक प्रतिनिधि पर उसकी मिलीभगत से की जाती है।

12.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बॉर्डियू, पी. (1984), *डिस्टिंक्शनः ए सोशल क्रिटिक ऑफ द जजमेंट ऑफ टेस्ट*, लंदनः रूटलेज एंड केगन पॉल।

बॉर्डियू, पी. व पैसरोन जे0सी0 (1977), *रिप्रोडक्शन इन एजुकेशन, सोसाइटी एंड कल्चर*, लंदनः सेज।

गन्स, एच.जे. (1947), *पॉपुलर कल्चर एंड हाई कल्चर*, न्यूयॉर्कः बेसिक बुक्स।

जेनक्स, सी. (सं.) (1993), *कल्चरल रिपोडक्शन*, लंदनः रूटलेज।

12.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) बॉर्डियू के अनुसार, सांस्कृतिक पुनरुत्पादन वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी पुनः प्रस्तुत किया जाता है, विशेष रूप से प्रमुख वर्गों की संस्कृति को 'पुनः प्रस्तुत' करने में सामाजिक प्रभाव के माध्यम से शैक्षिक प्रणाली के द्वारा ।

2) मार्क्सवाद की परंपरा मुख्य रूप से इस बात पर महत्व देती है कि किस प्रकार बाजार संस्कृति के घटकों को इस तरह पुनः पेश किया जाता है कि पुराने क्रम के वास्तविक संबंध बरकरार और छिपे रहते हैं।

3) मार्क्सवादी दृष्टिकोण के विरोध में दुर्खीम हमें सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन की आवश्यकता के विषय में बताते हैं। उन्होंने उपयुक्त सामूहिक धर्मनिरपेक्ष विश्वास का प्रस्ताव रखा जो परिवर्तन की स्थिति में एकजुटता के पुनरुत्पादन को सुनिश्चित करेगा।

बोध प्रश्न 2

1) यह समाज में प्रभुत्वशाली वर्गों की संस्कृति है। इसमें संगीत तथा चित्रकला जैसे क्षेत्रों में कला के कार्यों की सराहना शामिल है, जिन्हें वैध अभिरूचि की ऊंचाई माना जाता है।

2) यह संस्कृति का निम्नतम रूप है। इसमें संगीत तथा गीत शामिल हैं जो पूरी तरह से कलात्मक महत्वाकांक्षा या दिखावे से रहित हैं।

3) हैबिटस तथा क्षेत्र के बीच एक द्वंद्वात्मक संबंध है। एक ओर, क्षेत्र वास की स्थिति देता है दूसरी ओर, हैबिटस क्षेत्र को ऐसी वस्तु के रूप में निर्मित करता है जो सार्थक है, जिसमें अर्थ तथा मूल्य है, और जो ऊर्जा के निवेश के योग्य है।

4) शिक्षा प्रणाली प्रमुख संस्था है जिसके माध्यम से लोगों पर प्रतीकात्मक हिंसा की जाती है। सत्ता में विराजमान व्यक्तियों की भाषा, अर्थ, प्रतीकात्मक व्यवस्था अन्य जनसंख्या पर अधिरोपित की जाती है।

12.11 संदर्भ

अल्थुजर, एल. (1971), *'वैचारिक और दमनकारी राज्य तंत्र'*, लेनिन एंड फिलॉसफी एंड अदर एसेज में, लंदनः न्यू लेफ्ट बुक्स।

बॉर्डियू, पी. (1971), *'बौद्धिक क्षेत्र और रचनात्मक परियोजना'*, एम. एफ. डी. यंग (सं.) नॉलेज एंड कंट्रोल में, लंदनः कोलियर–मैकमिलन।

बॉर्डियू, पी. और पासेरॉन, जे–सी. (1977), *शिक्षा, समाज तथा संस्कृति में पुनरूत्पादन*। लंदनः सेज पब्लिकेशन।

बॉर्डियू, पी. (1977), *आउटलाइन ऑफ ए थ्योरी ऑफ प्रैक्टिस*, लंदनः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

बॉर्डियू, पी. (1984), *डिस्टिंक्शनः ए सोशल क्रिटिक ऑफ द जजमेंट ऑफ टेस्ट*, न्यूयार्कः रूटलेज।

कोरक, एम, एट अल. (2010), *''आर्थिक गतिशीलता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, और संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में बच्चों की भलाई''* ,श्रम के अध्ययन के लिए संस्थान, शोध पत्र संख्या 4814, बॉन, जर्मनी, 8 अप्रैल, 2021 को http://ftp.iza.org/dp4814.pdf से लिया गया।

डी सौसर, एफ. (1960), *सामान्य भाषाविज्ञान में पाठ्यक्रम*, लंदनः पीटर ओवेन।

दुर्खीम, ई. (1933), *समाज में श्रम का विभाजन*, न्यूयॉर्कः फ्री प्रेस।

गारफिंकेल,एच.(1967), *नृजातिविज्ञान में अध्ययन*, एंगलवुड क्लिफ्स, न्यूयार्कः अप्रेंटिस–हॉल।

गारफिंकेल, एच. (1991), *'रिस्पेसिफिकेशनः एविडेंस फॉर लोकलली प्रोड्यूस, नेचुरली एकाउंटेबल फेनोमेना ऑफ ऑर्डर, लॉजिक, रीजन, मीनिंग, मेथड*, आदि। एसेंशियल हैसेसिटी ऑफ इममोर्टल ऑर्डिनरी सोसाइटी (आई) : एन एनांउसमेंट ऑफ स्टडीज.'

जी. बटन (सं.) में, नृजातिविज्ञान तथा मानव विज्ञान। कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेसः 10–19।

लेवी–स्ट्रॉस, सी. (1964), *ट्रिस्ट टॉपिक*, लंदनः एथेनियम।

मार्क्स, के. (1970), *द जर्मन आइडियोलॉजी एंड थीसिस ऑन फ्यूअरबैक*, लंदनः लॉरेंस एंड विशार्ट।

रिट्जर, जी. (2011), *समाजशास्त्रीय सिद्धांत*, नई दिल्लीः मैकग्रा हिल एजुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड।

शैंएक्स डी.टॉमस जी. (2007), *'पार्टीसिपेशन इन पोस्टसेकंडरी एजुकेशन*, कल्चर टूरिज्म,एंड द सेंटर फॉर एजुकेशन स्टैटिक्स रिसर्च पेपर. स्टैटिक्स कनाडा ओटावा, 6अप्रैल,2021 को http://www.pisa.gc.ca/eng/participation.shtml से लिया गया

स्मिथ, जे. तथा जेनक्स, सी. (2000), *इमेज ऑफ कम्युनिटीः दुर्खीम, सिस्टम्स थ्योरी एंड द सोशयोलॉजी ऑफ आर्ट*, एल्डरशॉटः एवेबरी।

यंग,एम.एफ.डी.(1971), *नॉलेज एंड कंट्रोल,'*इंट्रोडक्शन',लंदनः कोलियर–मैकमिलन।

REFERENCES

- Bailey F.G. 1963 "Closed Social Stratification in India."*European Journal of* S*ociology V*ol. VII, I, pp. 107-24.
- Bottomore, T.B. 1985, *A Dictionary of Marxist Thought,* Oxford, Basil Blackwell Publisher Ltd. pp 120-21.
- Davis K., and W.E. Moore, 1945. '*Some Principles of Stratification'American* S*ociological Revie*w, Vol. 10, No. 2, pp. 242-49.
- Desai A.R., 19*75, State and Society in India: Essays in Dissent,* Bombay, Popular Prakashan.
- Friedan B., 1963 *The Feminine Mystique,* New York. W.W. Norton.
- Leach E. R; 1960 "What Should we mean by caste*?* In E.R. Leach (ed) *Aspects of Caste in South India, Ceylon and North-West Pakistan.* Cambridge, Cambridge University Press. pp 1-10.
- Maccoby E., and C.H. Jacklin 1*975 The Psychology of Sex Differences.* Stanford. Stanford University Press.
- Marx K. and F. Engels 1*947. The German Ideolog*y. New York. International Publishers p. 23.
- Mead, M. 1968. *Male and Female: A Study of the Sexes in à Changing World* New York. W.W. Norton.
- Mitchell, J., *1971. Woman's Estate. N*ew York. Pantheon.
- Rudra, A 1978 "Class Relations in Indian Agriculture-I". *Economic and Political Weekly,* Vol XII, N*o. 2*2.
- Smith M.G. 1964 'Pre-industrial Stratification Systems in S.M. Lipset and N.J. Smelsor *(e*d) *Social Structure and Mobility in Economic Development*. London, Routeledge and Kegan Paul pp 141-76.
- Goldthorpe J. H. and Frikson, R. (1994). Trends in Class Mobility - The Post War European Experience in Grusky *(*ed*). Social Stratification Class Race and Gender.* London Westview Press.
- Lipset, S.M. and R. Bendix (1959). S*ocial Mobility in Industrial Societies. B*erkale*y.* University of California Press.
- Richardson, C.J., *(1977) Contemporary Social Mobility,* New York: Nichols Publishing Company.
- Singer M. and Cohn B. (Ed.) (1966). *Structure and Change in Indian Society. J*aipur. . Rawat. Ch. 8, 9. 10.
- Singh. Y. (1986). *Modernization of Indian Tradition. J*aipur, Rawat.
- Sorokin P.A. (1927*). Social and Culture Mobility.* Glencoe. Free Press.
- Srinivas, M. N. (1966). *Social Changes in Modern India.* Mumbai Orient Longman.

- Tumin, Melvin M. *(*1957). 'Some Unapplauded Consequences of Social Mobility in a Mass Society'. Social Force. Vol 36 Oct 1957 pp 32-37.
- Chib, S.S. 1984. *Caste, Tribes and Culture of India* Vol. 8, 1984. New Delhi. Ess Ess Publicaitons.
- Cornell, Stephen and Douglas Hartman. 1998. *Ethnicity and Race: Making l.....ities in a Changing World.* New Delhi: Pine Forge Press.
- Connor, W. 1978. "Ethno-national Versus Other Forms of Group Identity: The Problem of Terminology", in N. Rhoodie (ed*.) Intergroup Accommodation in Plural Socierle* London: Macmillan.
- Dhanda, Ajit K. 1993.' A plea for Political Mobility' in Mrinal Miri (eds.*) C ritinuity and Change in Tribal Societ*y. Shimla: India Institute for Advanced Studies).
- Dollard, J. 1937. *Caste and Class in a Southern Town.* New York: Doubleday.
- Doley, D. 1998. 'Tribal Movements in North East' an K.S. Singh *(*ed*.) Tribal Movements, Tribal Studies of India Series T 183 Antiquity to Modernity in Tribal India* Volume IV.
- Dube, S.C. (ed.). 1977. *Tribal Heritage of India.* New Delhi: Vikas Publications.
- Eisenstadt, S.N. 1973. *Caste and Class in a Southern T*own. New York: Doubleday.
- Elwin, Verrier. 1959. *A Philossophy for NEFA*. Shillong. NEFA.
- Furnivall, J.S. 1942. "The Political Economy of the Tropical Far East", *Journal of the Royal Central Asian Society, 2*9, 195-210..
- Furnivall, J.S. 1*973. Tradition, Change and Modernity*. New York: John Wiley & Sons.
- Gastil, R D. 1978. "The Right to Self-Determination: Definition, Reality and Ideal, Policy". in N. Rhoodie(ed.) *Intergroup Accommodation in Plural Societies.* London: Macmillan Geetz, C. (ed.) 1963. *Old Societies and New States.* New York: Free Press.
- Gellner, Emest. 1983. *Nations and Nationalism.* Ethaca: Cornell University Press.
- Glazer, Nathan. 197*5. Affirmative Discrimination: Ethnic Inequality and Public Policy*. New York: Basic Books.
- Goswami B. B. and D.P. Mukherjee. 1992. 'Mizo Political Movement in K.S. Singh *(*ed.) *Tribal Movements in India (*Vol.1). New Delhi: Manohar (p. 129-150).
- Haimendorf, Christopher Von Furer. 198*2. Tribes of India/ The Struggle for Sivival*. Delhi: OUP
- Hyden, G. 1983. N*o Shortcuts to Progr*ess. London: Heinmann.
- Joshi, C. (1984)*, Bhindranwale: Myth and Reality,* Delhi, Vikas

- Kabui. Gangumei. 1982. 'The Zeliangrong Movement - A Historical Study in K.S. Singh *(ed.*) *Tribal Movements in India (Voll)* New Delhi: Manohar (p. 53-67)
- Kabui. Gangumei. 1983. 'Insurgency in the Manipur Valley' in B.L. Abbi (eds.) *North East Region, Problems and Prospects of Development*. Chandigarh: CRRID Publications.
- Kerr. Clark et al. 196*0. Industrialism and Industrial Man: The Problem of Labour and Management in Economic Growth*. Mass.: Harvard University Press.
- Kuper, L. and M.G. Smith (eds.) 1969a. Pluralism in Africa. Berkeley: University of California Press.
- MacCrone, I.D. 19*37. Race Attitudes in South Africa: Historical, Experimental and Psychological Studies*. London: Oxford University Press.
- Mukherjee Bhabanand and K.S. Singh. 1982. 'Tribal Movements in Tripura' in K.S. Singh (eds*.) Tribal Movements in India (V*ol. 1) New Delhi: Manohar Publications: 317-339).
- Mukherjee et al 1982. 'The Zeliangrong or Marmei Movement' in K.S. Singh (eds*.) Tribal Movements in India (V*ol. 1) new Delhi: Manohar *(*67-97*).*
- Murphree, M.W. 1986. "Ethnicity and Third World Development: Political and Academic Contexts", in J. Rex and D. Mason (eds.)*, Theories of Race and Ethnic Relations,* Cambridge: Cambridge: University Press.
- Nationalism' (p. 98-109). In K. Suresh Singh (ed*). Tribal Situation in India.* Lias: Shimla.
- Oominen, T.K. (ed.) 1990. *State and Society in India: Studies in Nation-Building.* New Delhi: Sage Publications.
- Oommen, T.K. (ed.) 19*97. Citizenship and National Identity: From Colonialism to Globalism.* New Delhi: Sage Publications.
- Patterson. O. 1953. C*olour and Culture in South Africa.* London: Routledge and Kegan Paul.
- Rostow, W.W. 1960. *The Stages of Economic Growth,* Cambridge: Cambridge University Press.
- Sabbarwal. S. 1992. "Ethnicity: *A* Critical Review of Conceptions and Perspectives". *Social Science Research Journal,* 1 (1 & 2) *M*arch-July.
- Samiuddin, A. ed. (1985)*, Punjab Crisis: Challenge and Response,* Delhi, Mitittal.
- Sharma, S.L. 1990. "The Salience of Ethnicity in Modernization: Evidence from India", *Sociological Bulletin,* 30 (1 & 2) Septemebr.
- Sharma, S.L. 1996. "Ethnic Surge for Political Autonomy*: A* Case for a Cultural Responsive Policu", in A.R. Momim (ed.) *The Legacy of G.S. Ghurye: A Centennial Festschrift.* Bombay: Popular Prakashan.

- Sharma, S.L. *(*1996), "Ethnic Surge for Political Autonomy: A Case for Culture Responsive Policy', in A.R. Momin's ed*. The Legacy of G.Š. Ghurye: A Centennial Fesischrift.* Bombay, Popular Prakashan.
- Shrivas M.N. and R.D Sanwal 1972. 'Some Aspect of Rohhcel Development in N. E. Hill Area of India' & RD Sanwal in 117-124 in (ed.) K. Suresh Singh*, Tribal Situation in India.* IIAS/ *M*otilal Banaridas: New Delhi.
- Sinha. A.C. 1998. In Bhupender Singh (ed). 'S*ocial Stratification among the Tribes of.. North Eastern India'* (p. *197-221)*.
- Smith, M.G. 1965. *The Plural Society in the British West Indies.* California: California : University Press.
- Sollor, W. *(1996), Theories of Ethnicity: A Classical Reader*. London, Macmillan.
- Thanga. L.B. 1998. 'Chiefship in Mizoram'. In Bhupender Singh (eds.) Tribal Self Management in North-East India, *Tribal Studies in India Series T. 183 Antiquity to Modernity*" Tuballadia Vol. II. (p. *247-274*).
- *V*erghese, B.G. 199*4. India's North-East Resurgence.* New Delhi : Konark.
- Wallerstein, I. 1986. "Societal Development or Development of the World System?", *International Sociology*, 1(1).
- Banton, Michael, 1965. *Roles: An Introduction to the Study of Social Relations*. Tavistock Publications: London Chapters 3,4,5 and 7, pp-42-126 and 151-171.
- Bottomore, T.B. 1962. *Sociology: A Guide to Problems and Literature.* Vintage Books: New York.
- Cohen, Percy, 1968. *Modern Social Theor*y. Heineman Educational Books Ltd.: London. Chapter 3, 34-68.
- Cuff, E.C. and Payne, G.C.F., (ed.) 1984. *Perspectives Sociology* (Second Edition). George Allen and Unwin: London. pp. 28-30.
- Dahrendorf, 1959. *Clas and Class Conflict in Industrial Soceity.* Routledge and Kegan Paul: London.
- Davis K., nad Moore W., 1945. Some Principles of Stratification, American Sociological Review 10: 242-249.
- Dumont, L., 1970. *Homo Hierarchius.* The University of Chicago: Chicago.
- Durkheim. E., 191*5. The Elementary Forms of the Religious Life. (*Trans. J.S. Swain in 1965). The Freee Press: Glencoe.
- 1964 (reprint*). The Division of Labour in Society.* The Free Press: Glencoe. Chapter I, pp. 49-69.
- 1982 *(*reprint*). The Rules of Sociological Method. (*First Published in 1895). Macmillan: New York.
- Evans-Pritchard, E.E*., The Nuer*. Clarendon Press: Oxford 1940.

- Firth, Raymond, 1956. *Elements of Social Orgaisation.* Walts and Company: London.
- Fortes, M., and Evans-Pritchard, E.E., 1940. *African Political* S*ystems.* Oxford University Press: London.
- Geller, E., 1964. *Thought and Change.* Weidenfield and Nicolson: London.
- Leach Edmund, 1968. S*ocial Structure*. In David I. Sills (ed.) International Encycolopaedia of Social Sciences. Macmillan Company and the Free Press: Glencoe.
- Levi Strauss, C. 1953. S*ocial Structure* in A.L. Kroeber (ed.) Anthropology Today An Encyclopaedic Inventory. The University of Chicago Press: Chicago and London. pp. 524-553.
- Linton, R., 193*6. The Study of Man*. D. Appleton Century Co.: New York. Chapter VIII, pp. 113-131.
- Malinowski, B., 1922. *Argonauts of the Western Pacific*. Routledge & Kegan Paul Lodon.
- Merton, R.K., 1957. *Social Theories and Social* S*tructure.* The Free Press : Glencoe Chapter IX, pp. 281-386.
- Mitchell, J.C., 1969. S*ocial network in Urban* S*ituations*. Manchester University Press : Manchester.
- Nadel, S.F., 19*57. The Theory of Social Culture,* Colen and West: London.
- Newcomb, T.H., 1969. *Community Roles in Attitude Formation*. *A*merican Sociological Review No.1.
- Radcliffe-Brown, A.R., 1952. *Structure and Function in Primitive Society. Th*e free Press: Glencoe, Chapter IX, pp. 178-187.
- Southall, Aidan, 1959. *On Operational Theory of Role.* Human Relations 12: 17-34.
- Thormer, Daniel 1992, Agrarian Structure in Dipanbar Gupta (ed.) S*ocial Stratification. O*xford University Press. Delhi
- Tumin, M., 1969. *Social Stratification.* Prentice Hall of India: New Delhi.

IGNOU SOCIAL MEDIA

QR Code -website ignou.ac.in

QR Code -e Content-App

QR Code - IGNOU-Facebook
(@OfficialPageIGNOU)

QR Code Twitter Handel
(OfficialIGNOU)

INSTAGRAM
(Official Page IGNOU)

QR Code -e Gyankosh-site

QR Code generated for quick access by Students

IGNOU website

eGyankosh

e-Content APP

Facebook (@offical Page IGNOU)

Twitter (@ Offical IGNOU)

Instagram (official page ignou)

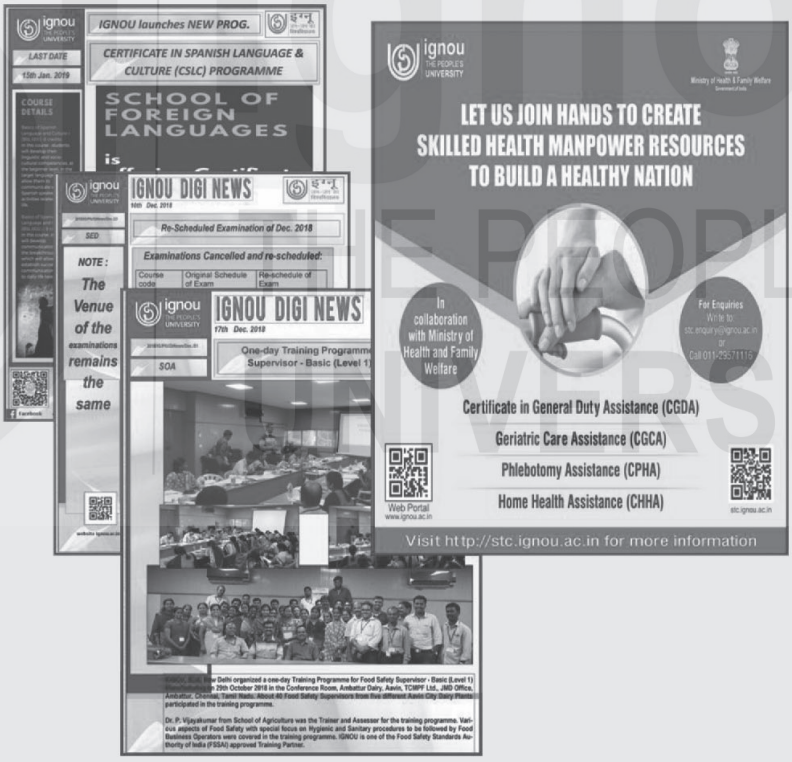

Like us, follow-us on the University Facebook Page, Twitter Handle and Instagram

To get regular updates on Placement Drives, Admissions, Examinations etc.